भारत का नं. 1 संस्थान
कौटिल्य एकेडमी
सफलता का प्रवेश द्वार ...

Model Answer Key

Date : 01/03/2020

Part-A

3 Marks

1- प्रशासन में सत्यनिष्ठा–

– प्रशासन में सत्यनिष्ठा का अर्थ–नैतिक सिद्धांतों व व्यवहार में सुसंगति स्थापित करना है।

2- नैतिकता–

– जो शुभ है, सही है, उचित है, उसी के अनुसार कार्य करना नैतिकता कहलाती है।

3- पारदर्शिता के प्रशासन में महत्व–

– भ्रष्टाचार पर अंकुश
– नवाचार में वृद्धि
– लोकतंत्र की धारणा को स्पष्ट करना।

4- जबावदेहीता–

– किसी अधिकारी जिसके पास विवेकाधीन शक्तियां है, जो उसके द्वारा किए गए कार्य का तर्कपूर्ण विवरण प्रस्तुत करना, जबावदेही कहलाती है।

5- अंतर्राष्ट्रीय पारदर्शिता आयोग की स्थापना–

– 1993 में बर्लिन (जर्मनी) में पीटर ईगन के द्वारा की गई।

6- मनोवृत्ति में विश्वास का महत्व–

– विश्वास प्रदत्त सूचनाओं के आधार पर क्षणिक तथा काल्पनिक तत्व है। जो स्थाई होकर मनोवृति में परिवर्तित हो जाता है।

7- सहानुभूति, समानुभूति से भिन्न है–

– समानुभूति द्विदिशीय होती है तथा सहानुभूति एकदिशीय होती है।

8- दरिद्र नारायण शब्द का प्रयोग–

– स्वामी विवेकानन्द ने।

9- सर्वोदय के सिद्धांत–

– सर्वोदय का अर्थ होता है– सबका उदय और समान उदय। अर्थात् देश के प्रत्येक व्यक्ति का सभी क्षेत्रों में होने वाले समान विकास को सर्वोदय कहा जाता है।

10- अभिक्षमता प्रशासन में किस प्रकार उपयोगी–

– अभिक्षमता प्रशासन में उपयोगी हैं–

1. अभिक्षमता ही किसी कार्य की कुशलता को प्रदर्शित करती है।
2. अभिक्षमता के कारण कार्यों का उचित वर्गीकरण किया जा सकता है।
3. अभिक्षमता किसी व्यक्ति विशिष्ट योग्यता होती है। इसलिए उस कार्य की सफलता सुनिश्चित की जा सकती है।

11- मनोवृत्ति व रूचि में अंतर–

मनोवृत्ति– किसी वस्तु, व्यक्ति के प्रति मनुष्य की सोच तथा व्यवहार को उसकी मनोवृत्ति कहा जाता है। यह नाकारात्मक तथा सकारात्मक दोनों प्रकार की होती है।

रूचि– रूचि मनोवृत्ति के भावनात्मक तत्व से प्रेरित है जो सदैव किसी वस्तु, व्यक्ति के प्रति सकारात्मक होती है।

12- सांवेगिक बुद्धि–

– संवेगों से आशय मनुष्य के हृदय में उठने वाले उन भावों से है जो कार्य व्यवहार को प्रभावित करते है। तथा इन संवेगों को पहचान कर सकारात्मक दिशा में प्रेरित करने की क्षमता को सांवेगिक बुद्धि कहते है।

13- वस्तुनिष्ठता का प्रशासन में महत्व–

– असमर्थकता में वृद्धि।

www.kautilyaacademy.com
www.facebook.com/KTSZone

– भ्रष्टाचार पर अंकुश

– न्याय की कल्पना की सत्यता

14- निष्पक्षता का अर्थ–

– वस्तुनिष्ठ कारणों को आधार बनाकर तथा पूर्वाग्रह से मुक्त होकर किया गया निर्णय निष्पक्षता कहलाती है।

15- नैतिक तर्क–

– किसी समस्या के समाधान हेतु अधिकारी जिन नैतिक विकल्पों का निर्माण करता है, उन्हें नैतिक तर्क कहते है।

6 Marks

A- भ्रष्टाचार को कम करेन में परिवार की भूमिका–

– परिवार समाजीकरण का एक प्रमुख अभिकरण है जहां परिवार वह संस्था है जहां किसी भी व्यक्ति के व्यक्तित्व के निर्माण की प्रक्रिया को प्रारम्भ किया जाता है। परिवार में ही बच्चों को समाज के मूल्य मानक सिखलायें जाते है और इन्हीं मूल्य मानकों को आत्मसाध करके बच्चा सामाजिक प्राणी बनता है इसलिए परिवार जिनता नैतिक उच्च गुणों वाला होगा तो बच्चा भी उतना ही नैतिक व्यक्ति बनेगा।

बच्चों को संस्कारित करने के लिए परिवार को अनुशासित व संस्कारित होना अनिवार्य है क्योंकि परिवार में जिस प्रकार के क्रियाकलाप होते है, बच्चा स्वतः ही उन क्रियाकलापों को आत्मसाध कर लेगा जिसमें गुणों के साथ–साथ कुछ अवगुण को परिवार के सदस्यों के द्वारा नैतिक शिक्षाओं के माध्यम से दूर किया जायेगा।

अतः परिवार में जिस प्रकार के मूल्य सिखलाएं जायेंगें व्यक्ति आगे चलकर उन्हीं मूल्यों के अनुसार कार्य करेगा।

इस संदर्भ में भारत के पूर्व राष्ट्रपति डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम का मानना था कि– ''भ्रष्टाचार रोकथाम में परिवार नामक संस्था महत्वपूर्ण योगदान निभा सकती है क्योंकि गुण तथा अवगुण यहीं से प्रारम्भ होता है यदि परिवारिक स्तर पर भ्रष्टाचार को नकार दिया जाये तों भ्रष्टाचार पर बहुत हद तक नियंत्रण लगाया जा सकता है।''

भ्रष्टाचार के संदर्भ में आपने यह भी कहा कि–यदि कोई भ्रष्टाचार के मामले में पकड़ा जाता है तो उतनी ही सजा उसके परिवार के किसी सदस्य को दी जानी चाहिए क्योंकि भ्रष्टाचार करने में परिवार की महत्वपूर्ण भूमिका होती है इसलिए परिवार के द्वारा ही नियंत्रित किया जा सकता है।

B- सांवेगिक बुद्धि का प्रशासन में महत्व –

1. **व्यक्तित्व के विकास के लिए**– व्यक्तित्व के विकास का महत्व व्यक्तिगत और प्रशासनिक दोनों क्षेत्रों में महत्वपूर्ण होता है सांवेगिक बुद्धि से लोकसेवकों में उच्च नैतिक गुणों का विकास होता है साथ ही दूसरों की भावनाओं को समझने तथा उनके प्रति समान भाव रखने का गुण विकसित हो जाता है चूंकि प्रशासन सामाजिक एकता तथा समुदायवाद की अवधारणा पर कार्य करता है इसलिए सांवेगिक बुद्धि का व्यक्तित्व के विकास में महत्वपूर्ण योगदान होता है।

2. **बहिर्मुखी एवं प्रसन्नचित्त**– सांवेगिक बुद्धि से युक्त मनुष्य स्वयं के मनोभावों को बेहतर तरीके से समझता है और उनका व्यवस्थित क्रियान्वयन करता है। जिसके परिणामस्वरूप व्यक्ति मानसिक द्वंद्व की स्थिति में नहीं फंसता और नित्य नये अनुभवों को प्राप्त करता है जिस कारण से व्यक्ति बहिर्मुखी एवं प्रसन्नचित्त हो जाता है।

3. **अनुक्रियाशीलता**– सांवेगिक बुद्धि से युक्त प्रशासन स्वयं के साथ–साथ अन्य के मनोभावों को भी समझता है, तथा उनकी पीड़ा एवं कार्य न होने से उत्पन्न होने वाली समस्याओं को भी समझने लगता है जिसके परिणाम स्वरूप प्रशासक आम जनता के प्रति अधिक क्रियाशील हो जाता है।

4. मितव्यता तथा समानुभूति जैसे गुणों का विकास।

5. भ्रष्टाचार पर नियंत्रण।

6. पर्यावरण संरक्षण।

7. आतंकवाद तथा नक्सलवाद के नियंत्रण में सहायक।

8. महिलाओं एवं पिछड़े वर्गो के प्रति संवेदनशील।

9. उद्देश्यों के प्रति प्रतिबद्धता।

C- अनेकान्तवाद–

– अन्+एक+अन्त+वाद

नहीं+एक+समस्त+ज्ञान/गुण

– अनेकान्तवाद शब्द अन्+एक+अन्त+वाद शब्दों से मिलकर बना है जिसका अर्थ होता है किसी वस्तु के अन्त को जानने के लिए एक दृष्टिकोण का खंडन करना अर्थात् जैन दर्शन में अनेकांतवाद के सिद्धांत को

www.kautilyaacademy.com
www.facebook.com/KTSZone

सबसे महत्वपूर्ण और मूलभूत सिद्धांत माना गया है जो किसी वस्तु के सम्पूर्ण गुणों से परिचित होने के लिए एक सिद्धांत का खंडन करता है इसलिए इसे विचारों की बहुलता का सिद्धांत कहा जाता है।

अनेकांतवाद का सिद्धांत कहता है कि भिन्न–भिन्न दृष्टिकोणों से किसी वस्तु को देखने पर भिन्न–भिन्न ज्ञान प्राप्त होता है। अतः एक ही दृष्टिकोण से देखने पर पूर्ण ज्ञान कैसे प्राप्त हो सकता है।

अनेकान्तवाद के अनुसार प्रत्येक वस्तु में अनेक विरोधी युगल एक साथ उपस्थिति होते है और एक बार में एक ही गुण अभिव्यक्त करते है अर्थात् प्रत्येक वसतु अनंत गुणों का समन्वय है जिसे जानने के लिए अलग–अलग दृष्टिकोणों को अपनाना होता है। इसलिए जैन दर्शन में सात नय या सप्तभंगी सिद्धांत प्रस्तुत किए गए है जिसमें किसी वस्तु को 7 दृष्टिकोंणों से देखा जाता है तथा इससे वस्तु के सात गुणों से पूर्ण ज्ञान से परिचित हो जाते है।

D- प्लेटो के आदर्श राज्य–

– प्रसिद्ध यूनानी दार्शनिक प्लेटों का जन्म 428 ई.पू. में ऐथेन्स नगर में हुआ था। आपके पिता एरिस्टन तथा माता पेरिक्टोन थी आपके गुरू प्रसिद्ध दार्शनिक सुक्रात थे। सुक्रात की मृत्यु के पश्चात् आप ऐथेन्स नगर छोड़कर चले गए तथा पुनः ऐथेन्स लौटने पर आपने एकेडमी नामक अध्ययन शाला की स्थापना नामक अध्यन शाला की स्थापना की तथा 347बीसी में आपकी मृत्यु हो गयी।

आदर्श राज्य– न्याय | शिक्षा | साम्यवाद | दार्शनिक

आपका प्रसिद्ध ग्रंथ– द रिपब्लिक राजनीतिशास्त्र के इतिहास में आदर्श बात पर लिखा गया है। आप पहले ऐसे दार्शनकि थे जिन्होंने आदर्श राज्य की बात कही और न्याय को सबसे महत्वपूर्ण सद्गुण माना।

सामान्यतः प्लेटो का न्याय अदालत तथा न्यायधीश द्वारा दिया जाने वाला न्याय नहीं है बल्कि नैतिकता की अच्छाई है। न्याय कोई बाहरी या कृत्रिम वस्तु नहीं है। शरीर का अविभाज्य अंग है इस प्रकार न्याय राज्य का गुण न होकर राज्य की आत्मा है।

आपने न्याय के सिद्धांत को स्थापित करने हेतु मनुष्य की प्रवृत्तियों का अध्ययन किया और पाया कि प्रत्येक मनुष्य की प्रवृत्ति अलग–अलग होती है। जैसे–

1. लालसा
2. साहस
3. विवेक।

प्रत्येक मनुष्य में एक प्रवृत्ति मुख्य रूप से पायी जाती है व अन्य प्रवृत्तियों गौण रूप से विद्यमान होती है इसलिए प्रवृत्ति के आधार पर मनुष्य भी तीन प्रकार के होता हैं–

1. उत्पादक वर्ग
2. सैनिक वर्ग
3. शासक वर्ग

उत्पादक वर्ग की प्रवृत्ति लालसा, सैनिक वर्ग की प्रवृत्ति साहस तथा शासक वर्ग की प्रवृत्ति बुद्धि होती है जिसमें शासक व सैनिक वर्ग को संयुक्त रूप से संरक्षक वर्ग कहा जाता है।

अतः सभी प्रवृत्ति वाले मनुष्य अपनी–अपनी प्रवृत्ति के अनुसार कार्य करें तथा किसी के भी कार्य ये अनावश्यक हस्तक्षेप न करें तो राज्य का मुख्य सद्गुण न्याय विकसित होता है।

E- रविन्द्रनाथ टैगोर के दर्शन–

दार्शनिक विचार– गुरूदेव के समग्र जीवन पर प्राचीन ऋषिमुनियों की तरह वेद तथा वेदांतों का गहरा प्रभाव था इसलिए आपका विश्व दृष्टिकोण सब कुछ को एक मानने के कारण एक तत्ववादी हो जाता है।

प्राचीन चिन्तकों व विचारकों ने सभी प्राणियों तथा जगत को एक रूप माना है और इन्हीं का अनुसरण करते हुए गुरूदेव सम्पूर्ण विश्व को एक इकाई के रूप में स्वीकार करते थे अर्थात् वेदों की वसुदेव कुटुम्ब की भावना से आप बेहद प्रभावित थे।

गुरूदेव का सम्पूर्ण जीवन वेदांत दर्शन व अस्तित्ववाद से प्रभावित रहा है। गुरूदेव उपनिषदों के विश्वबोध की भावना से अत्यधिक प्रभावित थे और सम्पूर्ण जीवन जगत में प्राणी की सत्ता को स्वीकार करते थे इसलिए गुरूदेव को मानव मात्र की एकता में अनन्त विश्वास था। आपका मानना था कि–ईश्वर प्रत्येक प्राणी व अन्तर में निवास करता है और

www.kautilyaacademy.com
www.facebook.com/KTSZone

मनुष्य का परम लक्ष्य यह है कि वह प्राणी में स्थित ईश्वरी तत्व की सेवा करें।

गुरूदेव के चिन्तन की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि मनुष्य को ही सृष्टि का सर्वश्रेष्ठ प्राणी मानते है और कहते है कि अस्तित्ववाद मानव कल्याण के लिए सकारात्मक दर्शन है इसलिए आप प्रकृति का सबसे बड़ा सत्य मनुष्य को ही मानते थे अर्थात् धर्मवाद, सम्प्रदायवाद तथा राष्ट्रवाद से भी बढ़कर मानवतावाद को महत्व देते थे।

F- जैनों की तुलना में गांधी जी की अहिंसा व्यवहारिक–

अहिंसा का व्यवहारिक पक्ष– गांधी की अहिंसा जैनों की तुलना में लचीली व व्यवहारिक है जिसके लिए गांधीजी ने कुछ परिस्थितियों का उल्लेख किया हैं–

1. हिंसक पशु, रोग के कीटाणु, फसल नष्ट करने वाले कीट तथा हानिकारक प्राणियों को नष्ट कर देना हिंसा नहीं कहलाती लेकिन यह समाज के हित में होना चाहिए।
2. चिकित्सक के द्वारा चिकित्सा के दौरान की जा रही हिंसा, हिंसा नहीं कहलाती लेकिन वह रोगी के हित में होनी चाहिए।
3. अगर कोई प्राणी असहनीय दर्द सह रहा है तो तथा उसकी मुक्ति का और कोई मार्ग न हो तो उसके जीवन को समाप्त कर देना ही उचित होता है ऐसा उस प्राणी के हित में होना चाहिए, इसे गांधीजी का दया मृत्यु का सिद्धांत कहते है।
4. यदि हिंसा व कायरता में किसी एक को चुनना पड़े तो हिंसा को चुनना उचित होगा।
5. उच्च नैतिक मूल्य तथा अध्यात्मक के विकास के लिए प्राणी को कष्ट पहुंचाना हिंसा नहीं कहलाती। जैसे– माता–पिता तथा शिक्षक के द्वारा बालक को डाटना।

G- मनोवृत्ति व इसकी विशेषताएं–

मनोवृत्ति– एल थट्सन के अनुसार, किसी मनोवैज्ञानिक विषय के पक्ष या विपक्ष में विचार करना मनोवृत्ति कहलाती है। इसकी विशेषताएं निम्नलिखित हैं–

1. मनोवृत्ति जन्मजात न होकर अर्जित होती हैं, इसलिये इस पर अच्छे–बुरे वातावरण का प्रभाव पड़ता है।
2. मनोवृत्ति जन्मजात नहीं होती वह तो हमारे समाज, परिवार तथा समुदाय संगति से विकसित होकर मनोभावों को प्रदर्शित करती है।
3. मनोवृत्ति आशावादी और निराशावादी दोनों प्रकार की होती है।
4. मनोवृत्ति के कारण मुनष्य विशेष प्रकार की क्रियायें करता है जो परिस्थिति के अनुकूल होती है जैसे– माता–पिता व शिक्षक का सम्मान करना तथा चोर डकैतों के प्रति दण्ड दिलाने की भावना बनाये रखना।
5. मनोवृत्ति किसी वस्तु या व्यक्ति के प्रति 1 बार विकसित हो जाती है तो वह स्थायी रूप से ग्रहण कर लेती है लेकिन सुतर्को के माध्यम से इसमें परिवर्तन किया जा सकता है। जैसे– पहले बाल विवाह के प्रति सभी की मनोवृत्ति सकारात्मक थी लेकिन वर्तमान में इसके कुप्रभाव बताकर मनोवृत्ति को नकारात्मक कर दिया।
6. यह व्यक्ति के व्यवहारों को एक निश्चित दिशा में निर्देशित करती है।
7. मनोवृत्ति के कारण मुनष्य किसी वस्तु या व्यक्ति के प्रति पहले से ही सकारात्मक या नकारात्मक दृष्टिकोण विकसित कर लेता है।

H- मूल्य एवं इसका वर्गीकरण–

– जिन सिद्धांतों पर चल कर मनुष्य अपने लक्ष्यों को प्राप्त करता है उसे मूल्य कहते है। मूल्य प्रत्येक सामाजिक व्यवस्था के अनिवार्य अंग होते है। इनके अस्तित्व के बिना किसी भी समाज की कल्पना करना भी संभव नहीं है। जैसे– नैतिक मूल्य, सामाजिक मूल्य इत्यादि।

मूल्यों का वर्गीकरण– मूल्य निम्नलिखित प्रकार के होते हैं–

1. **सामाजिक मूल्य**– सामाजिक मूल्यों के अंतर्गत उन सिद्धांतों को रखा गया है, जिसके आधार पर मनुष्य समाज में अपनी क्रियाओं को सम्पादित करता है। जैसे भाईचारा, समन्वय, सहानुभूति, सहयोग इत्यादि।
2. **विशिष्ट मूल्य**– ऐसे मूल्य जिनका प्रयोग व्यक्ति सामान्य स्थिति में तो नहीं करता लेकिन किन्हीं विशेष परिस्थितियों में मनुष्य जिनका प्रयोग करता है। उन्हें विशिष्ट मूल्य कहते है। जैसे– मौलिक अधिकार आदि।
3. **धार्मिक मूल्य**– ऐसे मूल्य जिनका प्रयोग धार्मिक क्रिया कलापों के अनुसार किया जाता हो, उन्हें धार्मिक मूल्य कहते है। जैसे– यज्ञोपवित पहनना, तिलक लगाना इत्यादि।
4. **नैतिक मूल्य**– ऐसे मूल्य जो मनुष्य को उचित व अनुचित का बोध कराते है। साथ ही मनुष्य के व्यवहार को नियंत्रित करते है। उन्हें नैतिक मूल्य कहते है।

जैसे– सत्यनिष्ठा, उत्तरदायित्व, कर्तव्यनिष्ठा इत्यादि।

www.kautilyaacademy.com
www.facebook.com/KTSZone

I- प्रशासन शरीर है, तो नैतिकता आत्मा–

– किसी भी देश की शासन प्रणाली तीन समकक्ष संस्थाओं के माध्यम से संचालित की जाती है। जिसमें न्यायापालिका, विधायिका तथा कार्यपालिका सम्मिलित होती है। विधायिका को शासन तथा कार्यपालिका को प्रशासन कहा जाता हैं।

– प्रशासन के द्वारा ही जनता तथा सरकार के मध्य समन्वय स्थापित होता है। साथ ही साथ सरकार के द्वारा चलाई जा रही नीतियों व योजनाओं को जमीनी रूप देने के लिए प्रशासन महत्वपूर्ण तंत्र है। जिस प्रकार शरीर के सम्पूर्ण अंग मिलकर कार्यों को सम्पादित करते है। ठीक उसी प्रकार से प्रशासन के सभी अंग मिलकर सरकार के सभी कार्यो को सम्पादित करते है। लेकिन यह कार्य कितने प्रतिशत सफल हो रहे है, इसके लिए आवश्यक है कि नैतिकता किस स्तर पर है। यदि प्रशासनिक व्यवस्था को नैतिकता की दृष्टि से देखा जाए तो यह ज्ञात होता है कि, यदि प्रशासन शरीर के रूप में कार्य करता है। तो वह कार्य तभी सफल माने जाएगें जब इस शरीर की आत्मा नैतिक होगी। क्योंकि नैतिकता ही सही गलत में अंतर करके कार्यों को सही दिशा दे सकती है। इसलिए कहा जाता है कि प्रशासन यदि शरीर है तो नैतिकता आत्मा है।

J- दयानंद सरस्वती का सामाजिक दर्शन–

सामाजिक दर्शन– दयानंद सरस्वती भारतीय समाज में नारी की गिरती हुई स्थिति से अत्यन्त दुःखी थे आपने पदप्रिया, बाल विवाह तथा नारी अशिक्षा का घोर विरोध किया। आपका मानना था कि स्त्रियों को वैदिक युग के समान अधिकार प्राप्त होने चाहिए और स्त्रियों के सम्मान के विरूद्ध चल रही कुप्रथाओं को समाप्त कर देना चाहिए तथा विधवा विवाह जैसी प्रथाओं को प्रसारित करना चाहिए तभी समाज का कल्याण संभव है।

धार्मिक आडंबरो का खंडन– आप वैदिक धर्म को ही सर्वश्रेष्ठ धर्म मानते थे। 1875 में सभी धर्मो का तुलनात्मक रूप से अध्ययन करने के उपरान्त आपने सत्यार्थ प्रकाश नामक ग्रंथ की रचना की जिसमें सभी धर्मो में फैले आडंबरो, अंधविश्वासों तथा कुप्रथाओं का घोर विरोध किया और कहा कि–

''इन प्रथाओं का प्रचलन पुरोहितों ने अपने स्वार्थ के लिए किया है।''

धर्म में आयी विसंगतियों को दूर करने के लिए आपने शुद्री आंदोलन चलाया और गांव–गांव शहर–शहर घूमकर वैदिक शिक्षा का प्रसार किया। वैदिक शिक्षा के प्रचार के लिए 6 अप्रैल 1875 को बम्बई में आर्य समाज की स्थापना की।

K- राम मनोहर लोहिया–

– राम मनोहर लोहिया जी की सबसे महत्वपूर्ण देन आर्थिक समाजवाद का सिद्धांत है जो कि आपके समाजवादी मॉडल या चौखम्भा राज्य के सिद्धांत पर ही आधारित है जिस प्रकार आप 4 स्तम्भों में शक्ति का विकेन्द्रीकरण करना चाहते थे उसी प्रकार आप आर्थिक शक्ति का भी विकेन्द्रीकरण करना चाहते थे क्योंकि आपका मानना था कि जब तक राष्ट्र की प्रारम्भिक इकाई ग्राम स्वयं की आवश्यकता की पूर्ति नहीं कर पायेगी तब तक राष्ट्र की उन्नति असंभव बनी रहेगी। इसलिए आप ग्रामीण स्तर पर लघु व कुटीर उद्योगों के समर्थक थे आपका मानना था कि लघु एवं कुटिर उद्योगों की स्थापना आर्थिक शक्ति का विकेन्द्रीकरण करेगी जिसके परिणामस्वरूप रोजगार के अवसर उत्पन्न होंगें और सभी लोगों को योग्यता के आधार पर रोजगार उपलब्ध होंगे।

आपका मानना था कि ग्रामीण स्तर पर जब व्यक्ति अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति करेंगें तो उनका हो रहे शोषण का अन्त हो जायेगा और जीवन स्तर में सुधार आयेगा जिससे कि देश की स्थिति सुधरेगी।

अतः आपका आर्थिक, समाजवाद का सिद्धांत राष्ट्र में आर्थिक शक्ति का विकेन्द्रीकरण ग्रामीण स्तर से राष्ट्रीय स्तर की ओर करता है जो कि शोषण का अंत करेगी और राष्ट्र उन्नति के पथ पर अग्रसर होगा।

L- राधाकृष्णन का दार्शनिक विचार–

1. **नव वेदान्त**– सर्वपल्ली जी पर शंकराचार्य के अद्वैतवाद का प्रभाव था लेकिन आप अंधविश्वासी नहीं थे। आपका मानना था कि परब्रम्ह सत्य है, शाश्वत् है तो इस सत्य की अभिव्यक्ति जगत व जीव असत्य कैसे हो सकते है। इसलिए आपने जगत व जीव को भी सत्य माना है आपके इसी सिद्धांत को नव–वेदांन कहा गया।

www.kautilyaacademy.com
www.facebook.com/KTSZone

राधाकृष्णन के नव–वेदान्त में पूर्व तथा पश्चिम दर्शन में समन्वय स्थापित करने का प्रयास किया गया। इसलिए आपको पूर्व तथा पश्चिम दर्शन का सम्पर्क अधिकारी या सेतु कहा जाता है। अनेक अध्ययन के उपरान्त आपने पाया कि पश्चिमी दर्शन–शास्त्र वैज्ञानिक तर्क व बुद्धि पर अत्यधिक जोर देता है। जो भौतिक विकास के लिए आवश्यक है वहीं पूर्व के दर्शन में सत्य पर तथा ज्ञान पर अत्यधिक जोर दिया गया जो अध्यात्मक के विकास के लिए आवश्यक है इसलिए पूर्व में पश्चिम का समन्वय तथा पश्चिम में पूर्व का समन्वय करके भौतिक व अध्यात्मिक सुख की प्राप्ति कर सकता है।

2. **तत्व मीमांसा**– राधाकृष्णन को तत्व मीमांसा अद्वैतवाद से प्रभावित है लेकिन आप शंकराचार्य की तरह इस जगत को मिथ्या नहीं मानते थे क्योंकि आपका मानना था कि जगत को मिथ्या मानना ब्रम्ह्म और जगत अभेद है। इसलिए भौतिक सुखों के लिए यह जगत आवश्यक है इसी ज्ञान को तत्व मीमांसा के नाम से जाना गया।

3. **ज्ञान मीमांसा**– राधाकृष्णन के अनुसार सत्य आत्म अनुभूति परक ज्ञान है जिसे जानने के लिए साधना आवश्यक है क्योंकि आत्म अनुभूति सम्बन्धित ज्ञान बुद्धि व तर्क दोनों से परे है। इसलिए परब्रम्ह्म के ज्ञान के लिए व्यक्ति को इन्द्रियों से मुक्त होकर साधना के क्षेत्र में प्रयास करना चाहिए।

आपके अनुसार परम सत्ता अवेद है, निराकर है, इसलिए इसे बाहरी ज्ञान के माध्यम से नहीं समझा जा सकता और न

ही बुद्धि के द्वारा जाना जा सकता है अतः मनुष्य के पास एकमात्र ऐसी शक्ति हो परम सत्ता का ज्ञान संभव है जिसे आत्म

शक्ति के नाम से जाना जाता हैं।

M- सामाजिक न्याय स्थापित करने के लिए प्रशासक को वस्तुनिष्ठ तथा निष्पक्ष होना चाहिए–

वस्तुनिष्ठता–

1. यदि कोई प्रशासक अपने निर्णयों में व्यक्तिगत चेतना के स्थान पर तर्क व साक्ष्यों को स्थान देगा तो समाज में व्याप्त भेदभाव पर स्वतः ही अंकुश लग जायेगा।

2. केवल वस्तुनिष्ठता को आधार मानते हुए कार्य किए जाए तो भाई भतीजावाद को खत्म किया जा सकता है।

3. किसी भी राष्ट्र में सामाजिक एकता के लिए न्यायिक समता ही प्रमुख आधार है और समता की यह पहली शर्त है कि निर्णय वस्तुनिष्ठा होना चाहिये।

   न्यायिक समता का उल्लेख कौटिन्य ने अपने ग्रंथ अर्थशास्त्र में किया था।

4. समाज में सुशासन की स्थापना तभी संभव है जब प्रत्येक व्यक्ति को समान अधिकार प्राप्त हो तथा वस्तुनिष्ठा ही वह गुण है जो पक्षपात का अन्त करके सभी व्यक्तियों को उनके अधिकार दिलायेगां

   अतःवस्तुनिष्ठा वह नैतिक गुण है जिसके आधार पर किसी भी राष्ट्र में सुशासन की स्थापना संभव है, तथा उपरोक्त विवरण से यह स्पष्ट हो जाता है कि वस्तुनिष्ठा भेदभाव जैसे अनेक अवगुणों को खत्म करके निष्पक्षता का विकास कर सकते है।

निष्पक्षता–

1. निष्पक्षता से प्रशासन में सभी जाति, धर्म तथा सम्प्रदाय के प्रति समतापूर्ण व्यवहार किए जायेंगें जिससे कि भेदभाव जैसी समस्या पर स्वतः ही अंकुश लगकर सभी वर्गो को लाभ पहुंचेगा।

2. निष्पक्षतापूर्ण कार्य करने से उचित व अनुचित का मूल्यांकन संभव होगा जिससे कि भाई–भतीजावाद व पक्षपात जैसी समस्याएं स्वतः ही नष्ट हो जायेगी।

3. समाज में एकता व अखण्डता के लिए यह आवश्यक है कि प्रत्येक प्राणी के लिए न्याय की व्यवस्था समान हो और यह केवल निष्पक्षता से ही संभव है।

4. निष्पक्ष प्रशासक मूल्यांक से युक्त होकर निर्णय करता है तो समाज व प्रशासन में व्याप्त क्षेत्रीय व वर्गीय असमानताएं स्वतः ही खत्म हो जाती है।

N- समानुभूति एवं प्रशासन में इसका महत्व–

समानुभूति का अर्थ– समानुभूति का अर्थ एक समान अनुभूति से है अर्थात् किसी व्यक्ति द्वारा अन्य व्यक्ति या प्राणी को मनोस्थिति को सटीक रूप से समझने की क्षमता को समानुभूति कहा जाता हैं।

किन्तु मनोवैज्ञानिकों का मानना है कि समानुभूति किसी दूसरो की मनोस्थिति को समझने तक सीमित नहीं है। बल्कि उसकी भावनाओं को उसी स्तर पर महसूस करने का

www.kautilyaacademy.com
www.facebook.com/KTSZone

नाम है जिस स्तर पर मूल व्यक्ति कर रहा है। अर्थात् स्वयं में एवं पर में कोई अन्तर न रह जाना ही समानुभूति है।

जैसे– बाढ़ में फंसे व्यक्तियों की एक–दूसरे के प्रति भावना।

समानुभूति के महत्व निम्न. हैं–

1. यदि प्रशासक में समानुभूति का तत्व निहित है, तो वह शासन के द्वारा प्रदत्त संसाधनों, शक्तियों, वस्तुओं तथा धन को अपना धन समझेगा। जिससे कि संसाधनों का सदुपयोग एवं मितव्ययता बढ़ेगी।
2. समानुभूति का मूल्य प्रशासक को सभी प्रकार के प्राणियों में समानता का व्यवहार करने के लिए प्रेरित करता है, जो कि भेदभाव को कम करने में सहायक है।
3. समानुभूति से युक्त प्रशासक अन्य व्यक्ति के दुःखों को अपना दुःख समझेगो और उन्हें तीव्रता के साथ दूर करने का प्रयास करेगा जिससे कि प्रशासन के कार्यों में तीव्रता आयेगी।

O- नैतिक दुविधा के समय अन्तरात्मा मार्गदर्शन करती है–

– अन्तर्रात्मा नैतिक मार्गदर्शन का आन्तरकि स्त्रोत होती है जब प्रशासक के समक्ष एक से अधिक नैतिक तर्क उपस्थित होते है तो उचित नैतिक तर्क का चयन अपने हृदय की आवाज सुनकर करता है तो उसे ही अन्तर्रात्मा कहा जाता है।

1. अन्तर्रात्मा का निर्माण परिवार, समाज, धर्म तथा रीति–रिवाजों से होता है। इसलिए अन्तर्रात्मा के आधार पर स्पष्ट निर्णय लेकर प्रशासन को समाजोन्मुखी बनाया जा सकता है।
2. अन्तर्रात्मा के द्वारा प्रशासक को नैतिक संकट की स्थिति में निर्णय लेने में आसानी होती है जिसके कारण नैतिक मूल्यों का समाधान संभव हो पाता है।
3. अन्तर्रात्मा के द्वारा निर्णयन क्षमता को तीव्र किया जा सकता है। जिससे कि प्रशासन और अधिक पारदर्शी बनेगा।

www.kautilyaacademy.com
www.facebook.com/KTSZone
KAUTILYA ACADEMY
INDORE